

DPN 6534

- १) पाण्डव गीता स्तोत्र PĀN_DAVA GĪTĀ STOTRA
२) हरीहरास्तक स्तोत्र HARĪ HARĀṢṬAKA STOTRA

Title :

Run. No. 7259

Cat. No. 45 ✓

Micro. No.

Subject STotra Hymn.

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 14 × 6.7

Folios 26

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor नारायण दास

Date: NS / SS / VS / KS 917 , १९८९ (1981)

Ruler / place Narayana Dasa.

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

△ ॐ स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ पाण्डव उवाच ॥

P.T.O.

प्रह्लाद नारद पराशर षण्डरीक, व्यासाम्बरीष शुक् सौतन्त्र भविष्यकाश्याः

स्कन्दमोक्षगान्धीविशेष विष्णोपरमाद्या, सतानन्दं परम भागवतान्तर्गतामे ॥

□ इति श्री पाण्डव गौता स्तोत्रं समाप्तं ॥

सम्ब ६१७ ज्येष्ठवदि रोज ५ ॥ एवं संपुष्टा सिधयकाव जुगो ॥

श्री ३ नारायणादासन शुभम् ॥

हरिहराष्टक स्तोत्र

ॐ नमो श्री हरिहराय ॥ ॥ धर्मा उवाच ॥ गोविन्द माधव कृन्द
हमरार, शंभो शिवेश शशि शेखर शूतपारो ॥ दामोदराचमुत
जगदीश वासुदेव त्पाज्याम गम्य इति सततं नमामि ॥

इति श्री स्कन्दप्रारणे काशी षडयमलोक वनशो हरिहराष्टक
स्तोत्र सम्पूर्णा ॥ ॥

१६८१ साल मीती माघवदि १० गते ७ रोज ३ का दिन कांछा वावा इस्ते
लीयेको मोदद ६०१ छ सये येक /

15

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

25



ॐ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ॥ या लुक्
॥ प्रह्लाद ना नदय ना नय पूती क या सा
स्व नी ष लु क ले न क ही ष का द्या ॥ न कांः
ग दार्क न व ति ष वि हि ष ल द्या तु मा न हं य न म हा
ग य ना न मा मि ॥ १ ॥ ला म रु व लो ड वा न ॥ ध र्मा वि
व द्ध ति य धि षि न का र्त्तु न न पा पं प्र हा ष ध ति वृ

को द न की र्त्तु न न ॥ ल नू धि न ध मि ध नं उ य
की र्त्तु न न मा डी स नी क थ य नां न रु य नि नाः
म ॥ १ ॥ प्र को द वा ॥ य मा न वा वि ग न ना ग य ना य न
ही ना ना य ही स न गु री स न नी स न नि ॥ ध्या न न न
न रु त कि लि ष थ ग ना र्त्तु मा नु ४ य था ध न न र्त्तु न य
न ४ पि वे दि ॥ ३ ॥ ॐ नमः ॥ ना ना य ल ना म न ना

ननामं प्रसिद्धवान् ४ कपिनः ४ पृथिव्याः ॥ अनेकः
ऊनाज्जिनपापसंबन्धुनह्यनवसूतमात्रवः ॥
॥ ५ ॥ यथिधिउवाच ॥ मयि धर्मपीतको नायवर्तुः
गोवर्त्मा कौमुदी सासितार्ग ॥ युष्मापतेय सुता
कायनाकं विस्वदेव सर्वलोके कतार्थ ॥ ५ ॥
मम नउवाच ॥ अलो यमनास्वनादनाधनावि

वाहकाद्याखिलविष्वम्हना ॥ समुद्रनायः
नवनाहनपिण्डसमस्त्यर्थहर्तृगर्वाप्रसिद्ध
॥ ६ ॥ अर्कनउवाच ॥ अविन्दुमयकमनकमय
यदिदुष्टदुष्टकानाहनादिना ॥ जिलाकविना
नविहायहादिनाहविंपुपनासिंगनिमहा
सना ॥ ७ ॥ नकलउवाच ॥ यदिगमनमधुस्त

लयासा नय द्वा यदि यकूलविहिने जाः
यनेयकि कीने ॥ कमिगतमपि गत्वा तंगता
त्यक्तवाला रुयुममद्विह कंनवरुकि
नका ॥ ६ ॥ **सह देव उवाच ॥** तस्य यद्वा नाह
स्य विष्णु ननु लन ऊह ॥ युष्मस्य यपि क्वचिन्
न स्यात्पिह तस्मान्नम ॥ ७ ॥ **कुरुवाच ॥** स्वक

र्मरु लतिर्दिष्टा यां यां यानि युजाम्यहं ॥ नः
स्यान्त्याहवा कंनल्ययिरुकिर्दृष्टामुम ॥
॥ १० ॥ **सह उवाच ॥** कर्षु नना कर्षुमनस्मः
नक्ति नो जीव कर्षु पतनस्थिता य ॥ नरिन्
दहाप्रयित्ति कर्षु रुयि यथामनु र्गदू
ना ॥ ११ ॥ **दीप उवाच ॥** कीटेषु पाक्षिषु

गवसनीरुपयुक्तं कृषिभयमनं कृषिपियः
गुगुनु॥ जगत्समं हवयुक्तं जगत्समसादा
स्वयं वरुकिं न तलायहि वा निणीय ॥ १२
सह डी वाय ॥ न काहि कृष्य कृगपुत्तमीदः
मममधी नहियाति गुल्य ॥ दमममधी पून
निति जन्म कृष्य पत्तमी न पून ह वाय ॥ १३

॥ अहिमन्यु वाय ॥ गमविन्द गमविन्द नमः
नान् गमविन्द गमविन्द नमः कृष्य ॥ गम
विन्द गमविन्द नमः गपा ॥ गमविन्द गमवि
न्द नमः कृष्य ॥ गमविन्द गमविन्द नमः
ग्रीनामना नायन वासुदय गमविन्द ये कृ
ष्य नमः कृष्य ॥ ग्रीकलवानन्द नृसिंहा

विष्णुमां ग्राहि सं सानरु ऊं गद वूं ॥१३॥ साय
किन्वावा ॥ अथ मय ह न विष्णु कृष्ण दाम
दनायुता ॥ गमादिदान नक्त सवेषा या स देव न
माहुते ॥१४॥ **उद्धवउवाच** ॥ वासुदेव्यपि
त्यक्त्वा न्य देव म्पासन ॥ रुषिणा जातु वी
मीने कुर्यं खनति इति मे ॥१५॥ **भोम्यउवा**

च ॥ अथां समीपे ण यना सनस्य दिवा च नागो
पथि गच्छता च ॥ यद्यस्ति किंचित्सूकृतं कर्तुं स
या ऊना दनस्तन कर्तुं न दुष्यतु ॥१६॥ **संज**
यउवाच ॥ आरुविषह्म हसि यिलास्रही
ना ध्यान व व्याघ्रादि वृक्षै र्मानां ॥ संकीः
रुषिनात्राय हाहाद मार्गं विमरुत दू ४ एवा ४

दुर्लभा ॥ १३ ॥ कृपा वार्य उवावा ॥ मर्क नन
४६ लमिदं सध केट लत्र मयार्थ नीयमदः
नगुरु एष नृवा ॥ लुहृ स ह स्य पत्रिवा नक
ह स्य ह स्य ह स्य ह स्य ह स्य मति सां सन लाक
नाथा ॥ १४ ॥ अल्ल ल सावावा ॥ गविन्द कनः
यऊ नार्दन वास्तु दय विष्णु विष्णु मधुसूद

नविष्णु रूप ॥ श्रीपन्नारुप नृषा लमयूकः
नाक नागाय लय नृर्ति ह नमो नमः ॥ १५ ॥
॥ कर्तु उवावा ॥ नार्थ दामिन नृत्तमिन
वितयासि नां नृत्तमिन नृत्तमिन वागुः
यामि ॥ रुक्मा लदी यवन ना म्भु म्भु दन नृत्त
गोशानि वास्तुप नृषा लम दहि दास्य ॥ १६ ॥

॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ तस्मान्ममः कान्तवा
सनाय नानाय समायामि न विक्रमाय ॥ गान्
तिकागिगदाधनाय तस्मान्ममः सुतसेयून् शूरुः
माय ॥ १७ ॥ गमः कार्यं वाच ॥ त्वमेव मागावः
पिना त्वमेव त्वमेव वै धृष्टसखा त्वमेव ॥
त्वमेव विद्याद विहा त्वमेव त्वमेव सर्वं मम

दं दं दं ॥ १८ ॥ ॥ इयं उवाच ॥ यद्वं मम
गमविदं माधवानं कं कं वा ॥ कुरु विष्णु
वी कं वा सुदं दं नमो मुने ॥ १९ ॥ ॥ इयं उ
उवाच ॥ तमं कुरुय दं वा यद्वं कालेन नमः
रुया ॥ या गम्यनाय या गम्यत्यामहं स नमः
गम ॥ २० ॥ ॥ विक्रं उवाच ॥ कुरुमायवा

सुदवाय् दवकीन्दनायवा॥ नन्द (गमय कृ
मानाय (गमविन्दाय नमो नमः ॥ ३१ ॥ सोम
दरुडवावा॥ नमः ४ पत्रम कल्याण नमस्तु
विश्वरायना॥ वासुदेवाय भक्त्या यदना
पत्रय नमः ॥ ३२ ॥ विवाह उवावा॥ नमो वृ
क्षस्य देवाय (गोब्राह्मणहिनारायवा॥ ३३ ॥

विनायकपुत्राय (गमविन्दाय नमो नमः ॥ ३३ ॥
॥ गल्या उवावा॥ अनामीषुषासं कार्णायानवा
ससमयुतं ॥ यवस्मन्ति (गमविन्दं नमो वावि
द्यमरुयं ॥ ३४ ॥ वलवदुडवावा॥ ॥ कृष्णक
ृष्णपालीत्यसगमिनीगमिरुवा॥ सैसानासु
वमग्मनापुसीदपूरुषारुमा॥ ३५ ॥ गीरुष्ण

उवाच॥ कृष्णकृष्णिकृष्णि यामास्मन्नमित्य
 ण॥ अलं हित्वा यथापप्रान्नकादूहनासंदे
 ॥३५॥ सत्ययुयीमिमन्त्राः खरयस्तर्द्धवा
 क्रूर्यामीम्बकुन्दननासिंहअनाईननि॥ जीवः
 नऊयत्यनूदिनंसनलेनलेखायाहाकाष्ठसे
 दृशयदशयददाम्यहीष्टं॥३६॥ धीवन

उवावा॥ सकृन्नानाहस्युक्तापूमाकल्पमगु
यी॥ गीर्मादि सध्वतीर्थेषु स्नानाहवगियुक्त
॥३६॥ सनउवावा॥ ननुवर्गगमयमन्त्राय
नगु॥ गमादावनीनगुसनस्वमीवा॥ सध्वीति
नीर्मानिवसन्तिनगु॥ यथाचूनादानकथपुस
ग॥ ३७॥ इत्यायमद्वया॥ ॥ ननकयश्मान

सुयमनसपरिरुचिर्ग॥ किंत्वया नार्थिमादय
४ केशव४कुंशनागना॥६०॥ नानदउवावा
॥ऊन्मान्ननरुहप्रसन्नपाद्यानसमाविता॥
ननात्संक्षीप्तपायात्संक्षुभ्ररुकिपुत्रायन॥
॥६॥ पुद्गादउवावा॥ नानपयानिरुहप्रयययय
वृजाम्पेहीनमृगमृगवलाहकिन्नयनामुसदा

त्वयि॥६॥ याप्रीतिनविबेकानीविषयचनय
यिनि॥ स्वामन्नरुनगीनाथदुदयान्नपसप
दुःशाविष्मन्निउवावा॥ किन्नस्यदानेशकि
किर्येशकिन्नपारि४किमधुने४॥ यानिर्य
धायमदर्वनानायसमन्नकिर्न॥६॥
॥यमदग्निर्वावा॥ लोहैरुवाँऊँयैरुवाँ

कृतं सुखं यथा कृतं यथा यथा मिन्दो वनः स्वः
मोक्षं दयस्व कृतं नो दत्तं नित्यं लवणं दत्तं
नित्यं नित्यं नित्यं संग्रहं यथा दत्तं दत्तं रुग्ण
यान् संग्रहाय नमो हनि ॥ ६३ ॥ रुग्णं दत्तं
उवाच ॥ लवणं कृतं यथा कृतं कृतं यथा

उवाच ॥ यथा मिन्दो वनः स्वः मोक्षं दयस्व कृतं
नो दत्तं नित्यं ॥ ६४ ॥ गमनं नित्यं उवाच ॥ गमनं कटिः
दानं गुरुनैष काशा माघपुत्रा गयगकल
वली ॥ यस्यायनं मन्त्रं यत्तु दानं गमविः
न्द गमविन्द नरुल्ये नामी ॥ ६५ ॥ गमिना वाच
॥ गमविन्द गि सदा स्मार्तं गमविन्द गि सदा उ

१५८१ साल माती माघवादि १० गते २ रे ज३ का
दिन कांछा वावा हल्लोली येको मोहर ६०१
छस मेयेक

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

१३

२४

पाण्डवगीता

प्री॥ गविन्द तिसदा ध्यानं सदा गविन्द कीर्त
नं॥ ४६॥ शुक्र न वप नं युक् गविन्द तिमिल क
न॥ गसादु निर्ग यन युक्तर याय कल्पग॥
॥ ४७॥ वाद नायति न वाय॥ न युग ४ कल्प वृ
क्षा सौ अनन्त ४ काम धनवा॥ विनाम मिश्रः
गविन्दो हनिनाम विविं नयन॥ ४८॥ हनिन

वाय॥ अयति अयति देवा देव की नन्दनार्थ
अयति अयति कृष्ण वृक्षि वै गपु दी प॥ अय
ति अयति मधुसूक्त ४ कामलां गम अयति अ
यति यथा हानत्स गम राम म कृन्द ४॥ ४९॥ पिः
यलाद उ वाय॥ ॥ ग्राम नृ सिं ह वि रु अ ग
नृ उ अय नाप गु या प ग म नाय रु वो व अय

॥ कृष्णयदुत्थिक कलाजिह्व कंग वाग्न ४ कृष्णय
पाय हनय गुनव नमस्तु ॥ १॥ हविह्वगुड
वाया ॥ ॥ कृष्णयदीययदपंक कृष्णयं कं नो गे
मवसुमानसना अहस ॥ ॥ पाद्ययाहा
समय कदवा नापिह ४ कदव नाध नवि
॥ ॥ स्मनहा कनस्तु ॥ १३ ॥ हनिनामेवतामे

वनामेवममजीवनं कलोनास्यवनास्यव
नास्यवगगिनस्थथा ॥ १॥ वलिचु उवाया ॥ ॥
कृष्णमिर्मगर्लनाम यस्य वाविप्रदरुना ॥ रुस्मि
रुयकिरु नातां महापागक कागय ४ ॥ ॥
॥ ११ ॥ नर्दधयवाया ॥ कृष्णययासुदवाय
हनययनमालेन ॥ ॥ प्रहान ४ कृष्णनामयः

ॐ विन्दाय नमो नमः ॥ ७५ ॥ कल्पय उवाच
॥ ॥ कृष्ण नमस्तस्मादयं पापं हृदयं जनैः
॥ गगनधारं दमाप्सामिति निर्विशङ्कं नो यथा ॥
॥ गंगा इयं धन उवाच ॥ जानामि धर्मं नय
मपु वृत्तिं जानामि पापं नयमतिवृत्तिः ॥
कनापि देव न हृदि स्मिन् न यथाति यथाः

स्मिन् यथा कनोमि ॥ ७६ ॥ ॥ यतु स्वगुप्तदाय
दा कल्पतां मधुसूदन ॥ अहं मेव महं हं नृ
मम दोषा नदि यम ॥ ७७ ॥ हृदय उवाच ॥
नामैव नय ॐ विन्दतामगत्वं गताधिकं ॥ द
दा स्वज्ञानसाम्प्रदायिकिर्न यातव्यं गयामग ॥
॥ ७८ ॥ लोमहर्ष उवाच ॥ नमामि नो नायन

पादयंकुं कशामिना नायकयुक्तनसदाः
॥ वदामिना नायकमैकैन्द ॥ नामनिर्मलं स्म
नामिना नायकनलमययं ॥ ३१ ॥ गोमकडवा
वा ॥ स्मर्तनसकलकल्याणं रुक्मं यगुका
यगं ॥ यत्रुषस्तुमर्कनित्यं युकोमिनात्रहं
हि ॥ ३२ ॥ गगडवावा ॥ नानायकनिर्मलं

स्मिवागमिनेरुवर्हिती ॥ गपपितनकथा
त्रपनंतीत्यनदपुनं ॥ ३३ ॥ दालुडवावा
॥ ॥ किनेस्यवदुलिस्मर्तुं रुक्मिण्यस्यउना
ईना ॥ नमोना नायकयनिमनु ॥ सर्वार्थः
साधक ॥ ३४ ॥ वेगस्यायनडवावा ॥ यगुया
मस्यत्र ॥ कषु यगुया ॥ धनईन ॥ गगुया

विज याहृत्वा कृयानिनिमतिर्मम ॥ ७५ ॥
 ॥ श्रीगिरिवाय ॥ ॥ हनिहं न निपायानि दुष्टानि
 हं न पि सृज ॥ न निरुयापि हं सृष्ट्वा दहस्य
 दहिषावक ॥ ७६ ॥ यत्राण न उवाच ॥
 सकृदुष्टनिर्गयत हनिनि स्रक्ष न द्वयं ॥ वदु
 ॥ यत्रिक न स्रक्ष न मोक्षाय गमनं प्रति ॥ ७७ ॥

॥ कालस्तुतवावा ॥ ॥ हजिङ्कनस्ताननः
सर्वदामधनपिया ॥ गविन्दनामपीयूषं पि
येजिङ्कनिनक्तन ॥ ५६ ॥ व्यासतुतवावा ॥ ॥
सत्यं सत्यं पूनः सत्यं दुःखमल्लयवाचन
॥ नयं दातुपनीं गमं न दयः कः ॥ बाल्य
नः ॥ ५७ ॥ धनं न त्रिहृतवावा ॥ ॥ अस्तुता

नक्तगमविन्दनासाञ्चनक्षरुषञ्जं॥नक्षत्रनि
सकला नागमः सत्यं सत्यं वदाम्यहं॥१०॥
मार्कण्डेय उवाच॥॥सहानिर्लसहृदिष्ट
वां धनुः सकला॥यन्महर्षिस्तत्तं वापि वास्तु
वर्तव्यं तथैव॥॥॥श्रुत्वा स्मिन्वाच॥॥

निमिषं निमिषार्द्धं वा प्रातिनिविष्टं दित्तनं ॥
 कुरुकाटि सहस्राणां ध्यातमं कं विनिष्कृतं ॥
 ॥ न २ ॥ मनसा कर्म क्षयाद्यस्मिन्निति ऊनाद
 नं ॥ ननु ननु कुरु कुरु प्रयागं नेमिषं वनं ॥
 ॥ न ३ ॥ अथ कुरु ॥ ॥ आला कसर्वशामुति
 विवायेर्वपुनः पुनः ॥ ॥ दमं कं समल्यनं

ॐ नमो नाना यहा ४ सदा ॥ नमः ॥ महादेव उवा
चा ॥ ॥ गतिनातिनवविडुं व्याधिद्वेषकल
वर्न ॥ शोषधं आकृवी गायं वैद्या नाना यः
ॐ हनि ॥ नमः ॥ ॐ नक उवाचा ॥ ॥
राजनामादनायिना वृथा कुरु निवेष्टव
॥ या सोविष्ट रुनादव ४. सुरु क्रीकिस्र पक्षन

॥ नमः ॥ नवदुष्कादया दवा जय यश्च न पाष
ना ॥ क्रीकिस्र नमः ॥ दर्वना नाना यहा वि
दुं ॥ नमः ॥ सनत्क मात्र उवाचा ॥ ॥ यस्य रुक्
गदा वरुंग नूठा यस्य वारुनी ॥ शिखयया
निगु कन ४ समेदि सुपुसी दनु ॥ नमः ॥ ॐ
दपविगु मायूर्य पुराय पाप पुष्प सनी ॥ १२ ॥

स्वयन्ताशनस्तु पातु वेऽपि कीर्तिनी नरे
॥ यः प० त्यागत्रे ल्हाय शुचिस्तद्गमान
॥ ४॥ गवांशतसहस्रस्य सम्यक् दुरुस्य यत्
ली ॥ ६० ॥ सत्तुल्य समवाप्नोति यः प० दिनि
संस्तुय ॥ सर्वपापेऽप्रमत्तं न विस्तृता सग
वृत्ति ॥ ६१ ॥ पु० तिग्रा पातु वेगी नास्तु समा

प० ॥ ६० ॥ संस्तुते ॥ अथ यदि ॥ नामध
धर्मस्तुल्य सिद्धयकाव रुला शा ३ नो नायः
शया दासते शुद्ध ॥ ॥ ॥ ॥ नमो ग्राहनि हः
नाय ॥ ॥ धर्म उवाच ॥ गमविदुमाधव कन्द
हमनात्र शंखनिवशा गलि ॥ गवतु शुलपा
॥ ॥ दामाद नाय न रुतार्ध न वासुदव त्या

रुगायः श्रुति संगतमासर्तति ॥ १ ॥ गंगमधनां ध
कत्रिषाह न नीले कं ० वेंकृ म केरु रुत्रिषा के
मथ वृपा रता ह न हा ख नु पना म नु वति
क म त्या म् ॥ १ ॥ वि भू नृ सिं ह म ध स द न र
क पा र ता म् ने नी य म गि त्रि ण र्ण क न व द्रु य न
॥ ना ना य त म स न नि षे ह द म म र्मा र ता त्या म्

॥ ३ ॥ म र्त्तु क या पृ वि ष म क त का म हा ग्रा ग्रा का
न या ग व स नां द द नी ल म् ने न ॥ ० ॥ न न द्रु लि
य स न गि द णे क ना प त्या म् ॥ ४ ॥ ल क्री य त
म ध त्रि षा प र रु मा द्रु र्ण कं ० दि ष स न म् नः
पि ना क पा र ता ॥ न न द के द ध न ती ध न प द न
व त्या म् ॥ ५ ॥ स द्रु य न गि प र रु द न द व द्रु म्

त्वदेवगतुश्च ऊर्ध्वपाता ॥ ग्राका न गम रुतः
तवालममं कले ह्या आ ॥ ५ ॥ ग्रा नाम नाघव
नम स्वत्रावत्तन रुतमममथ त्रिपापुमथ
विनाथ ॥ वालनम धनद्ववा कपनम नात्रः
ह्या आ ॥ १ ॥ ग्रा लिदगिनी गत्र वरुनी सल्लला
यनम कसपुना नम सपानन कशिना ॥ रुत

तिनत रुवतुगयनं पनात्र ह्या आ ॥ ६ ॥ गम
पीपनं यदयनं वसुदवत्तना कपुन गमेन
वृष रुध ऊर्ध्वलनेतु ॥ गमवर्धुना द्रुतलध
मिधुनी हा गमप ह्या आ ॥ ७ ॥ ह्या नात्रिला वन
पिना कषन ह्या नात्र कषानि नु कसला क
नकल्लवत ॥ विह्वल्य नत्रिपं गड ऊर्ध्वक

लाप त्या या ॥ १॥ अथ रुनाधिकशतनसूवा
ननामोसुद्धिनाललिननसुवकदय केन
॥ सनायकांददगुप्तंदि अकं ० अयः कृयादि
मासुजमहीसयसंनपस्थनाम ॥ १॥ ॥
॥ निग्रासुदपूनालाकाशावदयमलाक
वेनालहनीहनासुकसागुसंपर्क ॥ १॥





0

cm.

5

10

15

20